GLOBALCULTURZ Vol.IV No.1 January-April 2023 ISSN:2582-6808
Article ID-2023-4-1-001 **Pages:** 551-557 **Language:** Hindi
Date of Receipt: 2023.04.20 **Date of Review:** 2023.04.29 **Date of Pub:** 2023.04.30
Domain of Study: *Humanities & Social Sciences* **Sub-Domain:** *Education*

मॉरिशस के माध्यमिक विद्यालयों में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण: स्वरूपगत विश्लेषण

[Hindi as a second language teaching in Secondary Schools of Mauritius: A formative analysis]

Dr. Krishna Kumar Jha
Senior Lecturer & Head
Department of Hindi Studies
Mahatma Gandhi Institute
Moka, Mauritius
Email: kkjha1026@gmail.com

About the Author

At the Mahatma Gandhi Institute in Mauritius, Dr. Krishna Kumar Jha leads several departments with success. He is currently the head of the Hindi Department and has previously contributed to several special issue magazines published by the Department of Creative Writing and Publications. In the same institute, where he was appointed the head of the Language Resource Centre, he launched online introductory courses in several Indian languages. He also produced multimedia CDs to encourage young children to learn Indian languages and to make it easy for them to do so effectively using modern technology. In addition, he serves as the coordinator of the committee responsible for developing the Hindi curriculum for the Mauritius Ministry of Education. In this way, he has been promoting Hindi language and Indian culture in Mauritius for almost 22 years.

Note in English

The Hindi language was preserved by culture in Mauritius and began its illustrious journey from Baithkas through secondary schools before arriving in higher education institutions.Indian immigrants place significant weight to the language out of cultural pride. In Mauritius, all languages are taught as second languages, however Hindi is the third most popular language after English and French. Creole, the native tongue of the locals, has just made its way into the school curriculum and is now taught as an examinable subject., which is taught as a second language, had to overcome many obstacles in order to keep its status. Now that Creole is being emphasized in the school curriculum, Hindi will need to rise to new difficulties. For those who are passionate about Hindi, it is now imperative that they review the strategies and approaches used in Hindi instruction and create new ones in order to meet the new obstacles.

The research paper on &;Teaching Hindi literature as a second language in Mauritius' secondary schools; formative evaluation & discusses not only the current state of language teaching, creative and corrective measures, but also perspectives and recommendations for the effective teaching and learning of Hindi in Mauritius, so that Hindi has a solid foundation in contrast to English and French.

शोध सार

मॉरीशस की मॉरीशस के लगभग १८४ माध्यमिक विद्यालयों में लगभग १७००० हिंदी पढ़ने वाले छात्र और ३२५ हिंदी के अध्यापक हैं । अंग्रेज़ी और फ्रेंच भाषाएँ माध्यमिक विद्यालयों में अनिवार्य भाषा और हिंदी वैकल्पिक भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है । सन् २०११ से देश में मातृभाषा-शिक्षण के रूप में प्राथमिक विद्यालयों में क्रियोल की पढ़ाई शुरू हो गई है । भोजपुरी एक दो अभ्यास कार्य के रूप में हिंदी के ग्रेड १ और ग्रेड २ की पाठ्यपुस्तकों के अंतर्गत ही स्थान प्राप्त की हुई है । यहाँ पढ़ाई जानेवाली सभी प्रमुख भाषाएँ अंग्रेज़ी, फ्रेंच और हिंदी द्वितीय भाषा के रूप में ही पढ़ाई जाती हैं । ऐसी स्थिति में भाषागत शिक्षण का प्रश्न मॉरीशस में आज भी बेहद पेंचीदा है। बीजशब्द- मॉरीशस, हिन्दी भाषा, शिक्षण

शोध आलेख

मॉरीशस में हिंदी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

स्वतंत्र मॉरीशस-राष्ट्र के निर्माण में आप्रवासी भारतीयों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । स्वतंत्रता से पूर्व फ्रेंच (१७१०-१८१०) एवं अंग्रेज़ी (१८१०-१९६८) आधिपत्यकाल में भी इन साम्राज्यवादियों ने आप्रवासी भारतीयों के भाषाई हित को सर्वथा कुचलने में असमर्थ थे । बैठकाओं के रूप में जहाँ हिंदी और भारतीय संस्कृति जीवित थी वहीं अंग्रेजों ने टापू-भर में न सही कुछेक विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर हिंदी-पढ़ाई की व्यवस्था कायम की थी । ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह स्पष्ट होता है कि १८५७ में क्युर्पिप के रॉयल कॉलेज में हिन्दुस्तानी के अध्ययन-अध्यापन के लिए भारत से तालेब हुसैन को बुलाया गया था । आप्रवासी भारतीयों के बच्चों के लिए अंग्रेज़ी राज्यपाल हिग्गिंसन ने १८६४ में छह स्कूलों की व्यवस्था की जिसमें लगभग १२०० बच्चे शिक्षण से जुड़े हुए थे । १८७८ में अन्य अंग्रेज़ी राज्यपाल फायरे महोदय के देश से रवाना होने तक ५ स्कूलों में पूर्वी भाषाओँ का प्रयोग हो रहा था और लगभग ३०२३ भारतीय मूल के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे ।

यद्यपि शिक्षा में भाषा-नीति का मुद्दा १९वीं सदी तक अंग्रेजों द्वारा सुलझा दिया-सा लगता था फिर भी २०वीं सदी में देश में जो विभिन्न सामाजिक उथल-पुथल हुई, वे भाषाओं की प्रतिष्ठा और उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को लेकर कई झगड़ों की जड़ भी सिद्ध हुई । आप्रवासी भारतीयों की दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए भारत से आए पेशे से वकील, मणिलाल डॉक्टर द्वारा १९०९ में, और बाद में महाराजा कुँवर सिंह द्वारा मॉरीशस के प्राथमिक स्कूलों में मुख्य भाषाओं की श्रेणी में पूर्वीय भाषाओं को भी सिखाए जाने का आग्रह किए जाने के बाद १९३५ तक आते-आते देश की लगभग ४८ सरकारी एवं सरकार समर्थित पाठशालाओं में भारतीय भाषाएँ सिखाई जाने लगी थीं । १९४१ वाली अपनी रिपोर्ट में उस समय के शिक्षा-निदेशक डॉ फ्रैंक वार्ड ने न केवल इन भाषाओं के पढ़ाए जाने पर आपति की थी , अपितु यह भी सलाह दी थी कि सरकार इन भाषाओं के शिक्षण का खर्च उठाना बंद कर दे । तुरंत डॉ सर शिवसागर रामगुलाम और विष्णुदयाल बंधुओं ने डॉ वार्ड के इस दृष्टिकोण का पुरजोर विरोध किया । भाषाई मतभेद की इसी पृष्ठभूमि में १९४७ में भारतीय भाषाओं के लिए निर्णायक सिद्ध हुआ । भारतीय भाषाओं में मतदान के अधिकार मिल जाने से १९४८ के आम चुनावों में ग्रामीण इलाकों के कई उम्मीदवार निर्वाचित हुए जो भारतीय भाषाओं के कर्मठ समर्थक थे । इस राजनीतिक प्रक्रिया ने धीरे-धीरे औपनिवेशिक विघटन की प्रक्रिया के लिए मार्ग प्रशस्त किया, जिसकी परिणति १९६८ में मॉरीशस की स्वतंत्रता के रूप में हुई।

स्वातंत्र्योत्तर मॉरीशस की भाषाई नीतियाँ

स्वतंत्र मॉरीशस में भले ही हिंदी प्राथमिक, माध्यमिक एवं विश्वविद्यालयी स्तर पर पढ़ाई जाती है लेकिन अंग्रेज़ी और फ्रेंच की तरह उसकी स्थिति आज भी उतनी महत्वपूर्ण नहीं है । अनौपचारिक हिंदी शिक्षा की स्थापना हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा १९४६ में हिंदी परिचय परीक्षा से आरंभ हुई थी । १९७३ में स्वर्गीय शर्मा जगदंबी के द्वारा विधानसभा में माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण के लिए एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया । उसी वर्ष पोर्ट लुइस के म्युनिसिपल थिएटर के विशाल सभा में हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार शिव मंगल सिंह सुमन के आगमन एवं उनके सम्मान में तत्कालीन प्रधान मंत्री सर शिव सागर रामगुलाम ने घोषणा की कि उनकी सरकार प्रत्येक माध्यमिक स्कूलों में हिंदी पढ़ाई की व्यवस्था करेगी । यह ऐतिहासिक घड़ी २९ जनवरी १९७४ में पाँच हिन्दी शिक्षक की नियुक्ति हुई जिन्हें अलग- अलग सरकारी माध्यमिक विद्यालयों अंग्रेज़ी और फ्रेंच के समान हिंदी पढ़ाने के लिए भेजा गया ।

सरकारी हिंदी अध्यापक संघ के अथक प्रयास, सामाजिक संघर्ष एवं अदालती कारवाई के फलस्वरूप २००४ में सी० पी० ई० (CPE) परीक्षा संबंधी नियमावली में परिवर्तन लाए गए जिनके परिणामस्वरूप हिंदी सहित पूर्वीय भाषाओं के परीक्षा-अंक ग्रेडिंग के लिए स्वीकृत हुए । इन दिनों कुल ३१८ प्राथमिक स्कूलों में लगभग ६०० हिंदी के अध्यापक हैं और लगभग ४१ हज़ार बच्चे हिंदी पढ़ते हैं । मॉरीशस के लगभग १८४ माध्यमिक विद्यालयों में लगभग १७००० हिंदी पढ़ने वाले छात्र और ३२५ हिंदी के अध्यापक हैं । अंग्रेज़ी और फ्रेंच भाषाएँ माध्यमिक विद्यालयों में अनिवार्य भाषा और हिंदी वैकल्पिक भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है । सन् २०११ से देश में मातृभाषा-शिक्षण के रूप में प्राथमिक विद्यालयों में क्रियोल की पढ़ाई शुरू हो गई है । भोजपुरी एक दो अभ्यास कार्य के रूप में हिंदी के ग्रेड १ और ग्रेड २ की पाठ्यपुस्तकों के अंतर्गत ही स्थान प्राप्त की

हुई है । यहाँ पढ़ाई जानेवाली सभी प्रमुख भाषाएँ अंग्रेज़ी, फ्रेंच और हिंदी द्वितीय भाषा के रूप में ही पढ़ाई जाती हैं । ऐसी स्थिति में भाषागत शिक्षण का प्रश्न मॉरीशस में आज भी बेहद पेंचीदा है । मॉरीशस में भाषा-शिक्षण के अंतर्गत जहाँ एक ओर भाषा के रूप में मातृभाषा का प्रश्न महत्त्वपूर्ण हो गया है वहीं शिक्षण के रूप में स्थापित मॉरीशस में द्वितीय भाषा के महत्त्व को भी कम करके नहीं आँका जा सकता है ।

सरकारें आती जाती रहेंगी परन्तु भाषा नीतियाँ विशेषकर पूर्वीय भाषाओं की पढ़ाई संबंधी नीतियाँ रातों रात नहीं बदलने वाली हैं । अतः अभी के लिए प्राथमिक एवं अन्य स्तरों पर हिंदी शिक्षण में कोई आँच नहीं आनेवाली है ।

मॉरीशस की	कुल जनसंख्या	मॉरीशस के घरों में बोली जानेवाली भाषाएँ									
मॉरीशस		भोजपुरी	चीनी	क्रियोल	अंग्रेज़ी	फ्रेंच	हिंदी	मराठी	तमि	तेलुगु	उर्दू
कुल	1236817	65289	3,276	1,069,874	5,573	51,214	8690	490	1134	1600	814
अरबी	560	-	-	381	25	97	1	-	-	-	12
भोजपुरी	238451	43874	-	188229	321	987	508	4	1	5	34
चीनी	12077	1	2798	8002	153	740	-	-	-	-	-
क्रियोल	500699	152	16	484255	562	11196	33	1	22	1	32
अंग्रेज़ी	1351	2	-	109	1062	139	-	-	2	-	-
फ्रेंच	20099	-	-	991	299	18667	-	-	-	-	-
हिंदी	13256	238	-	6993	299	253	5226	-	5	1	8
मराठी	7310	12	-	6819	23	52	6	781	-	-	1
तमिल	19166	34	-	17788	96	274	26	-	-	-	-
तेलुगु	8584	65	-	6981	41	89	13	-	1272	-	-
उर्दू	7253	29	-	6487	86	89	68	-	-	-	419
अन्य जनसंख्या 408011		20878	462	342839	2759	18631	2809	163	323	320	308
		अन्य भाषाएँ- 18519									

(मॉरीशस, 2011 की जनगणना रिपोर्ट के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मॉरीशस में हिंदी बोलनेवालों की संख्या घटकर केवल १३२५६ हो गई है । इसका प्रमुख कारण मॉरीशस में तीव्रता से फैलती जा रही क्रियोली भाषा का प्रभाव है । उपरोक्त सारणी देखिए)

माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण

२०१६ में मॉरीशस के शिक्षा-क्षेत्र में ऐतिहासिक बदलाव आए हैं । शिक्षा प्रणाली में नाइन इयर स्कूलिंग को लागू किया गया है और राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार के लिए भाषाई पाठ्यक्रम के अनुकूल हिंदी पाठ्यपुस्तकों का निर्माण और उसका प्रयोग किया जा रहा है । मॉरीशस में माध्यमिक शिक्षण की व्यवस्था सात साल की होती है जो ग्रेड ७ से ग्रेड १३ तक चलती है । प्रायः ग्रेड ९ तक सभी हिन्दू बच्चे हिंदी विषय पढ़ते हैं । ग्रेड ९ में राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा होती है उसके बाद ग्रेड १० से विषय चयन के अंतर्गत अंग्रेज़ी फ्रेंच की तरह हिंदी अनिवार्य विषय नहीं है । मॉरीशस में स्नातक स्तर तक शिक्षा निःशुल्क है और बारह से सोलह साल के बच्चों के लिए माध्यमिक शिक्षा अनिवार्य है ।

माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा-शिक्षण का मुख्य लक्ष्य है – छात्र को भाषा-व्यवहार में कुशलता या प्रवीणता प्राप्त कराना । यह व्यवहार-कुशलता भाषा के चारों पक्षों- श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन (विचार तत्व, भाषा तत्व तथा शैली तत्व) से संबद्ध है ।

माध्यमिक स्तर पर हिंदी की पढ़ाई यह भी सुनिश्चित करती है कि सभी विद्यार्थियों को सीखने का अवसर मिले, शिक्षार्थियों को अपने व्यक्तिगत विकास को बढ़ाने के लिए अनुकूल मूल्य एवं कौशल प्राप्त हो, उनके समालोचनात्मक और अनुसंधान मूलक चिंतन को बढ़ावा मिल सके और नवीनता लाने तथा वैश्वीकरण की ओर दिन-ब-दिन अग्रसर हो रहे समाज में परिवर्तनों के समक्ष अपने आपको ढालने में समर्थ हो सके । इससे यह स्पष्ट होता है कि इस देश में हिंदी का विशेष महत्त्व है और इसी महत्ता के कारण हिंदी के विश्व-मंच पर मॉरीशस एक महत्त्वपूर्ण पहचान बनकर उभरा है । हालाँकि इस देश में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन द्वितीय भाषा के रूप में ही होता है, इसलिए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को हिंदी साहित्य-शिक्षण के अंतर्गत अनेक समस्याओं का

सामना करना पड़ता है ।

(निम्नलिखित सारणी देखें)

मॉरीशस में माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर परीक्षा में भाग लेने वाले हिंदी छात्रों की संख्या:

SC	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022
Hindi Language	1964	2040	1899	2032	1897	1898	1826	1717		1678	1720
Hindi Literature	38	61	58	71	48	54	41	45		65	85
HSC	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022
Principal Hindi Subject	468	442	456	466	425	448	376	351		316	155
Subsidiary Hindi subject	229	223	208	289	270	225	231	227		242	191

(स्रोत: mes.govmu.org)

मॉरीशस में हिंदी साहित्य शिक्षण का स्वरूप

शिक्षण एक कला है। शिक्षाशास्त्री रायवर्न के अनुसार शिक्षण की प्रक्रिया त्रिमुखी है। शिक्षा में तीन केन्द-बिन्दु है – ' शिक्षक, बालक और विषय।' अत: हम कह सकते हैं कि शिक्षण की प्रक्रिया में इन तीनों अंगों या तत्वों का होना अनिवार्य है। जब तक तीनों तत्व उपस्थित नहीं होंगे तब तक शिक्षण की प्रक्रिया पूर्ण नहीं होगी । अत: हमारे माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी-साहित्य-शिक्षण के लिए इन प्रमुख बातों पर ध्यान देना अति आवश्यक है –

हिन्दी साहित्य किसको किस स्तर पर कितना और कैसे पढ़ाया जाए?

हिन्दी साहित्य की कौन-कौन सी विधाएँ उच्च माध्यमिक स्तर पर कहाँ तक और

कैसे पढ़ाई जाए ?

हमारे माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की योग्यता क्या हो ?

द्वितीय भाषा के संदर्भ में हिन्दी साहित्य के अध्ययन-अध्यापन का कैसा दिशा-निर्देशन हो, जिससे हिन्दी-शिक्षण का सतत् विकास होता रहे ।

मॉरीशस में साहित्यिक शिक्षण हेतु मूलभूत समस्याएँ

हिंदी शिक्षा की आरंभिक समस्याएँ – मॉरीशस शिक्षा-प्रणाली के अंतर्गत हिंदी भाषा-शिक्षण जहाँ पूर्व प्राथमिक स्तर पर बिलकुल नहीं है वहीं प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा के रूप में जहाँ अंग्रेज़ी, फ्रेंच अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है वहीं हिंदी वैकल्पिक भाषा का ही स्थान ग्रहण की हुई है । इससे हिंदी-शिक्षण का उद्देश्य बाधित होता है । पूर्व प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण का होना भाषा सीखने की दृष्टि से उपयुक्त समय होता है । अतः सरकारी नीति के अभाव में ऐसे उपयुक्त समय का लाभ उठाने से हमारे बच्चे वंचित रहते हैं, इसका प्रभाव माध्यमिक स्तर के हिंदी शिक्षण पर पड़ता है । २०१७ से पूर्व माध्यमिक पाठ्यपुस्तकों में साहित्यिक पाठ्यविन्दुओं का नितांत अभाव के कारण भी माध्यमिक स्तर के बच्चों में साहित्यिक शिक्षण के प्रति अरुचि देखी जा सकती है ।

साहित्यिक ग्रंथों के चयन की समस्या – पाठ्यपुस्तक के रूप में किसी भाषा के शिक्षण में उस भाषा के साहित्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती । द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन करते समय साहित्य संबंधी कई समस्याएँ उठ खड़ी होती है । पहली समस्या शुद्ध रूप से भाषात्मक है । एक विशेष अवस्था तक तो वास्तविक साहित्य को नहीं अपनाया जा सकता । परन्तु फिर भी कभी-न –कभी किसी-न-किसी अवस्था पर छात्रों को द्वितीय भाषा के वास्तविक साहित्य से परिचित कराना होता है । प्रसिद्ध भाषा-शास्त्री श्री जेस्परसन का कथन है, 'कोई भी व्यक्ति दूसरी भाषा को इसी उद्देश्य से पढ़ता है कि वह साहित्य के मूलरूप से परिचित हो सके क्योंकि जो बात मूल में है वह अनुवाद में नहीं । उच्च माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में विशेषकर भारतीय साहित्यकारों के साहित्य सम्मिलित हैं । ऐसे में हिंदी साहित्य-शिक्षण में उन साहित्यकारों के दृष्टिबोध को समझना अपेक्षित माना जाता है । उनकी दृष्टिविंदु उनके परिवेश से संपृक्त होने के कारन हमारे छात्रों को भारतीय परिवेश को समझने की समस्या उत्पन्न होती है और इस कारण वे हिंदी साहित्य के प्रति कम रुचि दिखाते हैं ।

अध्यापन-प्रशिक्षण का अभाव – मॉरीशस में अध्यापक नियुक्ति-प्रक्रिया के अंतर्गत अप्रशिक्षित व्यक्तियों की नियुक्ति-प्रणाली प्रचलित है । ये अध्यापक द्वितीय भाषा-अध्यापन की विशेषताओं से अनभिज्ञ, उनके संतोषजनक भाषिक स्तर का न होना आदि के कारण

प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तरों के छात्रों का हिंदी-ज्ञान जितना होना चाहिए उतना नहीं हो पाता है ।

सरकारी ढुलमुल नीति – मॉरीशस में आज भी अधिकांश प्रतिशत नागरिक भारतीय मूल के हैं । वीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में इन सभी की मातृभाषा और संपर्क भाषा भोजपुरी थी । कालान्तर में अंग्रेज़ों द्वारा राजनीतिक स्वार्थपरता के कारण भाषागत विभेदीकरण की नीति अपनाई गई और इस परंपरा का निर्वाह स्वतंत्र मॉरीशस के राजनेता भी भली-भाँति कर रहे हैं । राजनेताओं की संकुचित मानसिकता के कारण ही भारतीय मूल के लोग अपनी सांस्कृतिक भाषा को राष्ट्रीय शिक्षा-नीति का अंग नहीं बना पाए हैं । भाषाई शिक्षा नीति के इस ढुलमुल रवैये के कारण भी हिंदी भाषा और हिंदी-शिक्षण की समस्या उत्पन्न होती है ।

साहित्यिक विधाओं के शिक्षण का स्वरूप

द्वितीय भाषा-साहित्य के अध्ययन में एक अन्य प्रमुख समस्या हमारे पाठ्यक्रम की भी है । साहित्यिक पाठ्य-समाग्री का विद्यार्थियों के स्तर एवं देश की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित न होना विद्यार्थियों की रुचि एवं बुद्धि के लिए बोझिल प्रतीत होती है। उच्च माध्यमिक विद्यालय के साहित्यिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कविता, कहानी एवं उपन्यास की पढ़ाई होती है।

(क) विद्यालयों में पद्य के अध्ययन की दिशाएँ

कविता शिक्षण वास्तव में केवल पाठ के पठन पर आधारित नहीं होना चाहिए । भावुक कवि की कृति भावुक सहृदय द्वारा हृदयंगम करने योग्य होनी चाहिए । कविता की भावाभिव्यक्ति में छात्र या सहृदय की सहायता मात्र की जाती है । यही 'सहायता' करना कविता-शिक्षण का आधार है । अध्यापक यदि शैली विज्ञान से काम ले तो अध्यापन में आधुनिक चिंतन के समावेश से लाभ होगा । लेकिन हमारे विद्यालयों में कविता अध्यापन चाहे वह भक्तिकाल का हो या आधुनिक कविता की हो, उसके लिए मात्र परम्परागत पद्धतियों का ही सहारा लिया जाता है, ऐसे में अध्यापकों द्वारा बिना हाव-भाव एवं लय के कविता पढ़ना एवं उसका अर्थ बतलाना ही प्रासंगिक समझा जाता है । तुलसी, सूर जैसे कवियों की कविताओं के अधुनातन उद्देश्य एवं आधुनिक कवियों के दृष्टिकोण एवं पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने या उसकी प्रासंगिता पर विशेष बल नहीं दिया जाता है । कई बार कवि की भाषा-शैली की विशेषता को बलताना भी काव्य को समझने में सहायक सिद्ध होती है, लेकिन इस ओर शिक्षक की उदासीनता भी समस्या का कारण प्रतीत होता है। अत: कविता-अध्यापन के लिए अध्यापक को कविता की मार्मिक व्याख्या करने की कला को विकसित करने की आवश्यकता होती है। यदि हमारे छात्र अध्यापकों की सहायता से कविता का ठीक से पाठ करे तो इससे वे कविता के रसास्वादन करने में समर्थ हो सकते हैं। इससे निश्चित रूप से अध्ययन-अध्यापन के कार्य की सफलता मानी जा सकती है । अध्यापन के अन्तर्गत एक और समस्या – पाठ्यक्रम में निर्धारित विषय से संबंधित भी होती है। मारीशस के माध्यमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में कविता के अन्तर्गत तुलसी की कविता अत्यन्त विस्तृत होने के कारण, यह शिक्षण की लय को जहाँ गति देने में असमर्थ है, वहीं इसे पढ़ाने में अधिक समय लेने के कारण भी तुलसी जैसे महत्वपूर्ण कवि एवं उनके पद्य कक्षा में विशेष प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाते हैं। अत: तुलसी, सूर एवं अन्य महत्वपूर्ण भक्तिकालीन कवियों को पढ़ाने के लिए उनके महत्वपूर्ण पद्यों के चयन पर विशेष ध्यान देने की आवश्कता है।

(ख) विद्यालयों में गद्य के अध्ययन की दिशाएँ

गद्य और कविता में अन्तर को डी. क्वेनी की परिभाषा से स्पष्ट समझा जा सकता है, उनके कथानानुसार, 'गद्य किसी वस्तु की प्रस्तुत्ति है तो कविता भाव अभिव्यक्त करती है। (Prose is presentation, poetry is representation) भावाभिव्यक्ति जहाँ काव्य की जान है वहीं 'गद्यं कवीनां निकषं बदन्ति' कहकर गद्य के महत्व को भी रेखांकित किया गया है । गद्य के रूप में हमारे पाठ्यक्रम में कहानी, उपन्यास जैसी विधाओं की पढ़ाई होती है । गद्य की ये विधाएँ पढ़ाते समय हमें भाषा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पड़ती है । गद्य साहित्य के पढ़ने से हिन्दी भाषा में सुधार की गुंजाईश अधिक होती है, पर हिन्दी कविता पढ़कर कोई न अपनी भाषा को सुधारेगा, न हिन्दी बोलना ही सीखेगा । इसलिए पाठयक्रम में पद्य और गद्य दोनों विधाओं को रखा जाता है, ताकि बच्चों की क्षमता का सर्वांगीण विकास हो सके । गद्य की विधाओं के अध्ययन के लए सरल पाठ्य-सामग्री के चयन से विद्यार्थियों में साहित्याभिरुचि उत्पन्न होती है । वे हिन्दी को सरल जानकर पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं । छात्रों की रुचि एक बार यदि पढ़ने में हो जाए तो अध्यापक का आधा काम सध गया समझिए । लेकिन हमारे विद्यालयों के एच.एस.सी. पाठ्यक्रम में इन समस्याओं पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है । यहाँ के पाठ्यक्रम में कहानी के रूप में 'उसने कहा था', 'तत्सत्', 'गुंडा'

जैसी कहानियाँ सम्मिलित हैं जो मॉरिशस के परिवेश बोध से पूर्णत: असम्पृक्त हैं । 'उसने कहा था' की शिल्प-योजना, 'तत्सत्' की दार्शनिकता एवं 'गुंडा'कहानी का विस्तृत कथा-कलेवर एच.एस.सी. के बच्चों में कहानी अध्ययन के प्रति रुचि नहीं उत्पन्न कर पाती है । पाठ्यक्रम में नाटक जैसी महत्वपूर्ण एवं रोचक विधा को सम्मिलित न करना भी त्रुटिपूर्ण लगता है क्योंकि नाटक का अध्ययन वार्तालाप शैली को विकसिक करने में सहायक सिद्ध होता है ।

साहित्य-शिक्षण का वास्तविक स्वरूप

साहित्य की अध्यापन-प्रणाली विशिष्ट होती है, उसपर अध्ययन की रीति निर्भर करती है । परंपरागत अध्यापन के रूप में इस प्रणाली के अंतर्गत पाठ्यक्रम सामग्री के संपूर्ण एवं समग्र अध्ययन ही अपेक्षित समझे जाते हैं और उसके बाद साहित्यिक मूल्यांकन पद्धति अपनायी जाती है । आधुनिक शिक्षण में अध्यापक की समग्र आलोचना-दृष्टि के अन्तर्गत वस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश और भाषा-शैली के अतिरिक्त उपन्यास या कहानी की समस्याओं एवं विशेषताओं का उद्घाटन, लेखकीय मर्म का खुलासा, लेखक के सूक्ष्म से सूक्ष्म निरीक्षण-तंत्र पर दृष्टिपात तथा उपन्यास जगत में उसका स्थान एवं उसका मूल्यांकन, जहाँ आवश्यक है, वहीं विद्यार्थियों में स्वयं के प्रयत्नों, उसकी सोच के लिए भी अवसर प्रदान करना उपयुक्त समझा जाता है । इसलिए कहानी हो या उपन्यास, उसे अक्षरश: कक्षा में पढ़ाने की बजाय परिप्रेक्ष्य एवं मार्ग-दर्शन पर बल देना चाहिए । छात्रों में परस्पर वाद-विवाद की गुंजाइश प्रदान करना भी शिक्षण के लिए उपयोगी समझी जाती है ।

साहित्य-शिक्षण को प्रभावित करने वाले अन्य तत्व

विद्यार्थी , पाठ्यक्रम, अध्यापन-प्रणाली के अतिरिक्त शिक्षण के प्रभावजन्य कारणों में मॉरिशस में शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे अयोग्य एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्ति-प्रक्रिया भी बच्चों में द्वितीय भाषा-शिक्षण के प्रति रुचि उत्पन्न करने में बाधक सिद्ध होती है । शिक्षकों में एक तो द्वितीय भाषा से संबंधित शिक्षण-प्रक्रिया का ज्ञान नहीं होता, दूसरा वे द्वितीय भाषा के रूप में विषय को पढ़ाने में भी ठीक तरह दक्ष न हो पाने के कारण विद्यार्थियों से न्याय नहीं कर पाते हैं । उनके द्वारा शिक्षण-विधि में विविधता संबंधी ज्ञान का भी अभाव होता है, वे पाठ को आज के समय से नहीं जोड़ पाते । प्राय: ऐसे शिक्षकों द्वारा अध्यापन- प्रक्रिया शिक्षक एवं पाठ्य-पुस्तक केन्द्रित होने से बच्चों में पाठ के प्रति विशेष आकर्षण उत्पन्न नहीं करा पाता है । वे हिन्दी पढ़ने के लिए प्रेरित नहीं होते । अत: शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा ऐसे मानदंडों यथा शिक्षकों को आज के ज्ञान से निरंतर संवलित करने संबंधी पुनश्चर्या पाठ्क्रम (Refresher Course) करने पर ध्यान देने की आवश्यकता है, जिससे योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों का शिक्षण-क्षेत्र में प्रवेश संभव हो सके ।

हिन्दी साहित्य-शिक्षण में नवीन प्रयोग की आवश्यकता

द्वितीय भाषा के संदर्भ में हिन्दी साहित्य के अध्ययन-अध्यापन के लिए उपयुक्त दिशा-निर्धारण की आवश्यकता है । अध्यापकों द्वारा शिक्षण-क्षेत्र में आधुनिक विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि शिक्षण में नवीनता के साथ-साथ विद्यार्थियों में सीखने की प्रवृत्ति भी उत्पन्न हो सके। इस पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि बच्चों को हिन्दी साहित्य के रूप में बोलने, लिखने एवं पढ़ने की सही शिक्षा मिले । भाषण-विधि के अतिरिक्त शिक्षकों को ऐसी अनेक क्रियात्मक एवं सहयोगात्मक विधियों को अपनाना चाहिए ताकि बच्चों में आत्मविश्वास की भावना प्रबल हो सके । इसके लिए विद्यालयी स्तर पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषण, वाद-विवाद, कहानी, कविता, अंत्याक्षरी, नाटक आदि प्रतियोगिताएँ, साहित्य-संगोष्ठी एवं शैक्षणिक यात्रा आदि का भी आयोजन होना चाहिए । समय-समय पर विद्यालयी पत्रिका निकालने से भी बच्चों में साहित्यिक सर्जना के प्रति अभिरुचि उत्पन्न होती है। मॉरिशस के माध्यमिक विद्यालयों में इस तरह की गतिविधियों का अभाव है। अतः ऐसी गतिविधियों के आयोजन द्वारा बच्चों में जहाँ हिन्दी भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न होगी, वही उनमें भाषा के प्रति उत्साह भी बढ़ेगा।

साहित्य-शिक्षण में पाठ्यक्रमेतर क्रियाओं के अतिरिक्त अन्य कई प्रक्रियाएँ

हिन्दी साहित्य-शिक्षण में पाठ्यक्रमेतर क्रियाओं के साथ-साथ भी अन्य प्रक्रियाएँ हिन्दी साहित्य-शिक्षण के लिए उपयोगी समझी जाती हैं, जैसे अक्षर-ज्ञान के लिए फ्लेश कार्ड का प्रयोग, चित्रों के आधार पर मौखिक भाषा का स्पष्टीकरण, कक्षा में अभिनय एवं बच्चों की चिंतन-क्षमता को विकसित करने के लए विचार-विमर्श की पद्धति द्वारा विषय को पढ़ाना । मीडिया के रूप में श्रव्य-दृश्य साधनों के उचित प्रयोग और अनेक हिन्दी वेबसाइटों द्वारा उपलब्ध साहित्य-सामग्री का परिचय प्राप्त कराना भी बच्चों में हिन्दी भाषा के महत्व

को विकसित करने तथा उनमें साहित्य-अध्ययन की क्षमता प्रदान करने मे सहायक सिद्ध होता है ।

निष्कर्ष

अंत में यही कहा जा सकता है कि मॉरीशस के माध्यमिक विद्यालयों में साहित्य-शिक्षण संबंधी स्थिति-परिस्थितयों का समय-समय पर विश्लेषण के साथ-साथ उसके नित्य नवीनीकरण एवं उनके सुधारात्मक उपायों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है तथा साथ ही सकारात्मक मानसिकता एवं भविष्य की अनंत संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए हिन्दी साहित्य का अध्ययन-अध्यापन किया जाए तो निश्चित रूप से यहाँ प्रयोग होने वाली अंग्रेजी, फ्रेंच जैसी मुख्य भाषाओं की तरह हिन्दी भाषा की उपादेयता भी सुदृढ़ता से स्थापित होगी। उनमें एक प्रकार की स्पर्धा का भाव भी पैदा होगा ।

सन्दर्भ एवं **टिप्पणियाँ**

1. Bennet, W.A , Aspects of language and language Teaching.
2. Christopherson Paul, Second language & learning , Penguin Book ltd, England-1973.
3. ब्रजेश्वर वर्मा (सं.) , भाषा-शिक्षण तथा भाषा-विज्ञान, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
4. भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा-शिक्षण, साहित्य सहकार, दिल्ली-51
5. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
6. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव, भाषा शिक्षण, प्रथम संस्करण, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
7. सीताराम चतुर्वेदी, भाषा की शिक्षा , हिंदी साहित्य कुटीर , वाराणसी ।
8. Shivendre K. Verma, Current Trends in linguistics and Teaching of Hindi as a Second language , Central Institute of Hindi, Agra 1973.
9. शिवशंकर अवस्थी (सं.), वाक्यपदीय (भर्तृहरि), चौखम्बा, विद्याभवन , वाराणसी ।